सितम्बर: 2022 वर्ष : 5 अंक : 12

# सिफरी मासिक समाचार

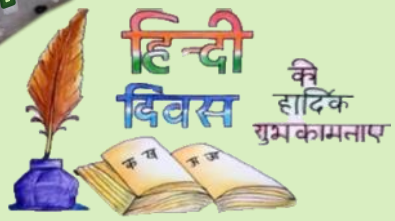


# नील क्रांति की ओर अग्रसर

## निदेशक की कलम से

"हम हौंसला नहीं करते इसलिए नहीं कि कुछ करना दुष्कर है; कुछ करना दुष्कर इसलिए होता है क्योंकि हम हौंसला नहीं करते।" - सेनेका।

संस्थान का मासिक न्यूज़लेटर का सितंबर 2022 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। सर्वप्रथम मैं आप सभी को हिन्दी दिवस की बधाई देता हूँ।

भारत एक विशाल देश है। प्राचीनकाल से यहाँ धर्म, भाषा तथा संस्कृति में विविधता होने के बावजूद भारतवासी परस्पर मिल-जुलकर रहते हैं। भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, परन्तु वर्तमान भारतीय संविधान में 22 प्रादेशिक भाषाओं को भारतीय भाषा के रूप में मान्यता मिली है। इन भाषाओं में हिन्दी भारतवर्ष में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। भारत स्वतंत्र होने के पश्चात् 14 सितम्बर 1949 के दिन भारतीय संविधान में देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकृति मिली और इसी उपलक्ष्य में हर साल 14 सितम्बर के दिन हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

प्रस्तुत अंक (सितंबर 2022) में संस्थान के अगस्त 2022 के कार्यकलापों और अनुसंधान गतिविधियों का विवरण दिया गया है जिसमें प्रमुख है - स्वाधीनता दिवस, 2022 के अवसर पर दिनांक 13 से 15 अगस्त तक "हर घर तिरंगा कार्यक्रम" का आयोजन।

अंत में, आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

धन्यवाद,

(बसन्त कुमार दास)

# 76वाँ स्वाधीनता दिवस - भाकृअनुप-सिफरी में मनाया गया "हर घर तिरंगा"

देश का 76वां स्वतंत्रता दिवस भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में "हर घर तिरंगा" के रूप में 15 अगस्त 2022 को बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष में हर घर तिरंगा अभियान 13-15 अगस्त से संस्थान मुख्यालय और इसके सभी क्षेत्रीय केंद्रों में आयोजित किया गया।

दिनांक 13 अगस्त 2022 को समस्त संस्थान कर्मियों ने अपने-अपने घरों पर तिरंगा लहराया। इस दिन पश्चिम बंगाल के खोलसे बील में एक जन भागीदारी कार्यक्रम का आयोजन किया गया और स्थानीय मछुआरों को तिरंगा तथा मिठाईयां वितरित की गईं।

संस्थान की उपलब्धियों और विकसित तकनीकों पर एक झाँकी तैयार की गई जिसे विभिन्न स्थलों पर घुमाया गया।

दिनांक 14 अगस्त 2022 को फिट इंडिया फ्रीडम दौड़ संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर से मंगल पण्डे पार्क तक आयोजित किया गया जिसमें संस्थान कर्मियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इसके पश्चात एक वृद्धाश्रम का दौरा किया गया जहां उन्हे तिरंगा तथा मिठाईयां दी गईं।

दिनांक 15 अगस्त 2022 को आयोजित 'प्रभात फेरी' में संस्थान कर्मियों ने जोर-शोर से भाग लिया। इसके बाद संस्थान के निदेशक, डा बि के दास जी ने ध्वजारोहण किया और सभा को संबोधित किया। अपने सम्बोधन में निदेशक महोदय ने भारतीय स्वतंत्रता की 76वीं वर्षगांठ और अमृत महोत्सव के पूरा होने के अवसर पर संस्थान कर्मियों और उनके परिवारजनों को बधाई दी तथा कोविड-19 महामारी के बावजूद राष्ट्र को योगदान देने के लिए धन्यवाद दिया।

निदेशक महोदय ने पिछले एक वर्ष में संस्थान द्वारा अर्जित विशेष उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। संस्थान ने कृषि-खाद्य सशक्तिकरण में अनुसंधान और विकास में उत्कृष्ट में योगदान के

लिए पुरस्कार प्राप्त किया। उन्होंने मणिपुर, झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल राज्यों में अनुसूचित जाति उपयोजना और आदिवासी उपयोजना के माध्यम से मछुआरा समुदायों की आजीविका में सुधार पर जोर दिया।

उन्होंने यह भी कहा कि पिछले पांच वर्षों में चार प्रौद्योगिकियों का व्यावसायीकरण किया गया है और हमारी नई तकनीक सिफरी सर्कुलर केज के व्यावसायीकरण की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। उन्होंने वेस्ट टू वेल्थ टेक्नोलॉजी (कचरे से कंचन) अर्थात बीएसएफ आधारित फ्लोटिंग फीड

और सिल्क वर्म प्यूपा से विकसित फीड पर भी जोर दिया। उन्होंने सभी संस्थान कर्मियों को सिफरी और राष्ट्र निर्माण में अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए 100% योगदान देने के लिए कहा।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने दीपोर बील, असम में दीपोर बील पर ध्वजारोहण समारोह और जागरूकता कार्यक्रम मछुआरे समुदाय के साथ आयोजित किया। अन्य क्षेत्रीय केंद्रों में भी विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये। 76वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के लिए अधिकारी, कर्मचारी सदस्य, शोधार्थी अपने परिवार के सदस्यों के साथ एकत्रित हुए थे। अभियान के तहत विभिन्न कार्यक्रमों में कुल 1525 व्यक्तियों ने भाग लिया।

# घर घर तिरंगा

## गंगा की मछलियों के संरक्षण हेतु झारखंड, साहिबगंज जिले में "नेशनल रैन्चिंग प्रोग्राम" का आयोजन

झारखंड, साहिबगंज जिले के उपायुक्त श्री रामनिवास यादव, आईएएस, ने 2 अगस्त 2022 को मुक्तेशर घाट में भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता द्वारा शुरू किए गए "नेशनल रैन्चिंग प्रोग्राम" का उद्घाटन भारतीय मेजर कार्प (लेबियो रोहिता, लेबियो कतला, सिरहिनस म्रिगला और लेबियो कालबासु) के 2 लाख मछली अंगुलीमीनों को प्रवाहित करके किया। कार्यक्रम में साहिबगंज जिले के मत्स्य अधिकारीगण, अध्यक्ष (झारखंड पूर्वी गंगा सहकारी समिति लिमिटेड) श्री. अशोक चौधरी और सैकड़ों मछुआरे उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. राजू बैठा और श्री मितेश एच. रामटेके ने किया।

अपने उद्घाटन भाषण में श्री यादव ने कहा कि नदी में रैन्चिंग कार्यक्रम भारतीय मेजर कार्प और अन्य मछलियों के घटते हुए स्टॉक को फिर से बढ़ाने के लिए किया गया एक प्रयास हैं जो मछुआरा समुदाय की बेहतर आजीविका सुधार में मदद करेगा। श्री यादव ने मछली पालन और संरक्षण के महत्व और गंगा नदी के मछुआ समुदाय के सामाजिक-आर्थिक विकास पर इनके प्रभावों पर प्रकाश डाला। सिफ़री के निदेशक, डॉ. बि.के. दास ने बताया कि सिफ़री ने उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में गंगा नदी के किनारे विभिन्न स्थानों में 58 लाख मछली के बीज छोड़े हैं। जन जागरूकता अभियान के दौरान, मत्स्य संरक्षण, विशेष रूप से "हिल्सा और डॉल्फिन संरक्षण" पर बहुत जोर दिया गया हैं । डॉ. दास ने हिलसा और डॉल्फिन सहित गंगा नदी की मछलियों के संरक्षण के प्रयासों में मछुआरा समुदाय को अगुवाई के लिए उन्हें उत्साहित किया।

# श्री पुरुषोत्तम रूपाला जी ने वाराणसी, उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय रैंचिंग कार्यक्रम का शुभारंभ किया

"आज़ादी का अमृत महोत्सव" वर्ष और जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर, भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 'राष्ट्रीय रैंचिंग कार्यक्रम-2022' के तहत वाराणसी (उत्तर प्रदेश) के अस्सी घाट में दिनांक 19 अगस्त 2022 को रैंचिंग कार्यक्रम का आयोजन किया। संस्थान ने 'नमामि गंगे' कार्यक्रम के तहत गंगा नदी मात्स्यिकी विकास तथा घट रही प्रजातियों के पुनरुद्धार हेतु एक जन-जागरूकता अभियान और मछली रैंचिंग कार्यक्रम कार्यक्रम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम माननीय राज्य मंत्री, पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन विभाग, भारत सरकार, श्री. पुरुषोत्तम रूपाला जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तथा इसके वाराणसी के गणमान्य अधिकारी उपस्थित थे जिनमें प्रमुख हैं - डॉ जे के जेना, उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद; श्री कौशल राज शर्मा, जिला अधिकारी, वाराणसी; डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी आदि । इस अवसर पर गंगा नदी

(रोहू, कतला और मृगल) के दो लाख से अधिक कृत्रिम रूप से निषेचित वाइल्ड मछली प्रजातियों के जर्मप्लाज्म को दिनांक 19 अगस्त, 2022 को वाराणसी के अस्सी घाट में गंगा संरक्षण पर जन जागरूकता अभियान द्वारा छोड़ा गया ।

माननीय मंत्री श्री रूपाला जी ने सर्वप्रथम माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी को आभार व्यक्त किया कि उनके पहल से ही पावन नगरी, काशी के गंगा नदी में मत्स्य अंगुलिकाओं की रैंचिंग की जा रही है। उन्होंने कहा कि गत 4 वर्षों में लगभग 190 मछली प्रजातियों की उपलब्धता को इस नदी में दर्ज किया गया है जिससे असपास रहने वाले मछुआरों की आजीविका और आर्थिक उन्नयन में मदद मिली है। उन्होंने यह आशा व्यक्त किया कि प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत नदियों में किया जा रहे रैंचिंग गतिविधियों से मछुआरों की आय में सतत वृद्धि और स्थिरता आएगी।

उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने मछुआरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के उन्नयन और पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता में गंगा मात्स्यिकी के महत्व पर प्रकाश डाला।

डॉ. बसंत कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी ने मुख्य अतिथि और सम्मानित अतिथियों का स्वागत किया और उन्हें नमामि गंगे परियोजना के तहत भाकृअनुप-सिफरी की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय रैंचिंग कार्यक्रम के तहत उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में गंगा नदी के कई क्षेत्रों में

58 लाख से अधिक वाइल्ड मछलियों को छोड़ा गया । उन्होंने स्थानीय मछुआरों को जागरूक किया और मछलियों और डॉल्फ़िन संरक्षण के लिए आवश्यक गंगा के स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डाला।

डॉ. संदीप कुमार बेहरा, सलाहकार, नमामि गंगे ने नदी में देशी मछली प्रजातियों के संरक्षण के लिए राज्य तथा केंद्र सरकार के बीच समन्वय को बढ़ाने पर जोर डाला। उन्होंने कहा कि प्रजनन अवधि के दौरान मत्स्ययन निषेध के लिए राज्यों को सख्त दिशा-निर्देश जारी करने के लिए माननीय केन्द्रीय मंत्री के हस्तक्षेप की आवश्यकता है। नमामि गंगे परियोजना के तहत देश के चार राज्यों में गंगा नदी के विभिन्न स्थलों पर लगभग 58 लाख से अधिक वाइल्ड कार्प प्रजातियों को छोड़ा गया है।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन का प्रमुख उद्देश्य मछली प्रजाति विविधता का सर्वेक्षण, बहुमूल्य रोहू, कतला, मृगल, कालबासु और महासीर का स्टॉक मूल्यांकन के साथ-साथ चयनित मछली प्रजातियों के बीज उत्पादन और नदी में घटती मत्स्य प्रजातियों के पुनरुद्धार हेतु रैंचिंग शामिल हैं। कालबासु, मृगल और रोहू जैसी मछलियाँ न केवल मछली पकड़ में वृद्धि करेंगी बल्कि नदी की स्वच्छता को बनाए रखने में भी मदद करेंगी क्योंकि ये नदी में उपस्थित कार्बनिक अवशेषों को खा जाती हैं।

इस कार्यक्रम में समाज के सभी वर्गों की सक्रिय भागीदारी देखी गई जिससे जन जागरूकता द्वारा गंगा नदी और इसकी बहुमूल्य मछलियों को बचाया जा सके ।

# "पश्चिम बंगाल के जलाशयों में पिंजरा पालन के माध्यम से मछली उत्पादन वृद्धि" पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा 17 अगस्त 2022 को "मछली उत्पादन वृद्धि" पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था। कार्यशाला का उद्देश्य पिंजरा पालन के माध्यम से पश्चिम बंगाल के जलाशयों में मछली उत्पादन वृद्धि के दायरे पर चर्चा करना था। पिंजरा पालन के विभिन्न पहलुओं पर डीओएफ अधिकारियों, पश्चिम बंगाल की क्षमता। डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने कार्यशाला की अध्यक्षता की। इसमें डॉ शमिक दास, संयुक्त निदेशक, डॉ उत्पलसर, डीडीएफ, एफएफआरटीसी, सुश्री ए एस अल्वी, डीडीएफ, पश्चिम क्षेत्र, डॉ सप्तऋषि विश्वास, डीडीएफ कोलकाता और मध्य क्षेत्र, श्री सिद्धार्थ सरकार, डीडीएफ, जीजेडबी और उत्तरी क्षेत्र, डॉ किशोर धारा, डीडीएफ, एसपीयू और अन्य डीओएफ अधिकारी ने भाग लिया।

कार्यशाला की शुरुआत डॉ एम ए हसन के स्वागत भाषण से हुई। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने राज्य में मत्स्य पालन क्षेत्र के कार्यकलापो की चर्चा की और अन्तर्स्थलीय खुले जल से मछली उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों और दिशानिर्देशों के बारे में जानकारी दी। डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने अधिकारियों को संबोधित किया कि वैज्ञानिक प्रबंधन और तकनीकी हस्तक्षेप के माध्यम से राज्य के जलाशयों और आर्द्रभूमि में मत्स्य उत्पादन के सुधार पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि संस्थान की तकनीकी विशेषज्ञता के द्वारा पश्चिम बंगाल के जलाशयों में पिंजरा पालन के कार्यान्वयन से राज्य से मछली उत्पादन को बढ़ावा मिल सकता है। उन्होंने पिंजरा पालन परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए मत्स्य पदाधिकारियों को सहयोग सहित समर्थन और तकनीकी मार्गदर्शन का आश्वासन दिया। डॉ. एस. सामंत, प्रभागाध्याक्ष, आरईएफ डिवीजन, डॉ. यू.के. सरकार, आरडब्ल्यूएफ डिवीजन के प्रभागाध्याक्ष, डॉ एस के नाग, प्रभागाध्याक्ष, एफआरएआई डिवीजन, डॉ बी के बेहरा, प्रभागाध्याक्ष, एईबीएन डिवीजन ने भी कार्यशाला में भाग लिया और पश्चिम बंगाल में पिंजडा पालन के दायरे पर अपने विचार व्यक्त किए।

प्रतिभागियों के लिए पिंजड़े पालन पर काम कर रहे वैज्ञानिकों की एक टीम द्वारा पिंजडा पालन के विभिन्न पहलुओं पर सत्र, जिसमें व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण प्रजातियों के डिजाइन, निर्माण, संचालन और पालन प्रोटोकॉल, पिंजड़े में खाना और स्वास्थ्य प्रबंधन आदि पर आयोजित किए गये, और पश्चिम बंगाल में प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत पिंजरा पालन का विकास पर भी चर्चा की। सत्र के बाद मत्स्य विभाग के अधिकारियों और संस्थान के वैज्ञानिक कर्मचारियों के बीच संवादात्मक सत्र का आयोजन किया गया।

समापन सत्र के दौरान, निदेशक डॉ. बि.के.दास ने भागीदारी और हैंड होल्डिंग के माध्यम से राज्य के अंतर्स्थलीय खुले जल के प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और मत्स्य प्रबंधन के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को दोहराया। उन्होंने विभागीय अधिकारियों को खुले जल पारिस्थितिकी तंत्र के तहत अनिवार्य मत्स्य

संसाधनों पर लाइन विभाग द्वारा किसी भी गतिविधि पर संस्थान के पूरे समर्थन और सहयोग का आश्वासन भी दिया। मत्स्य पालन विकास में देश के साथ-साथ राज्य के लाभ के लिए आपसी सहयोग पर सकारात्मक टिप्पणी के साथ कार्यशाला समाप्त हुई। कार्यक्रम का समापन डॉ एम ए हसन के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। कार्यशाला का आयोजन डॉ. एम.ए. हसन, प्रमुख, फेम डिवीजन, डॉ. ए.के. दास, प्रभारी-प्रशिक्षण और विस्तार प्रकोष्ठ, श्री मिशाल पी, वैज्ञानिक, आरडब्ल्यूएफ डिवीजन और सुश्री गुंजन कर्नाटक द्वारा किया गया ।

# युवा शोधकर्ताओं के लिए "पारिस्थितिकी तंत्र मॉडलिंग: अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के प्रबंधन की ओर" पर प्रशिक्षण

अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन दुनिया भर में लोगों की आजीविका और खाद्य सुरक्षा में एक महत्वपूर्ण घटक है, साथ ही साथ भारी आर्थिक लाभ और मनोरंजन में योगदान देता है। अंतर्स्थलीय पारिस्थितिक तंत्र पर मत्स्य पालन के दीर्घकालिक प्रभावों की अनुसंधान-आधारित समझ की कमी और इसी तरह मत्स्य पालन और जलीय जैव विविधता पर अंतर्स्थलीय जल से जुड़ी मानव गतिविधियों के प्रभाव से इन मूल्यवान संपत्तियों को खतरे में डाल दिया गया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, एक नए शोध दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के आर्थिक, सामाजिक और पोषण लाभों की मात्रा निर्धारित करने पर केंद्रित हो; मत्स्य पालन शोषण संभावित पारिस्थितिकी तंत्र उत्पादकता और

जलीय जैव विविधता का मूल्यांकन करने के लिए डिज़ाइन किए गए आकलन में सुधार। स्थायी अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र आधारित दृष्टिकोण सबसे महत्वपूर्ण है।

इसका समर्थन करते हुए, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 27 जुलाई से 2 अगस्त 2022 तक "पारिस्थितिकी तंत्र मॉडलिंग: अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के प्रबंधन" पर एक 7-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम में, कुल 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें 15 पुरुष और 7 महिलाएं

शामिल थीं, जैसे कि वैज्ञानिक, सहायक प्रोफेसर, अनुसंधान विद्वान और विभिन्न संस्थानों जैसे मत्स्य पालन कॉलेज (राहा, असम; किशनगंज, बिहार और) के युवा पेशेवर; सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, छत्तीसगढ़; डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड; आईसीएआर-सीआईएफई, मुंबई और आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर।

डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सीआईएफआरआई ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया और खुले जल संसाधनों में पारिस्थितिकी तंत्र मॉडलिंग की आवश्यकता के बारे में बताया और इन जल संसाधनों के सतत प्रबंधन के लिए इन मॉडलों की प्रयोज्यता पर जोर दिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का महत्व यह है कि जहां भी मत्स्य संसाधनों के आकलन, व्याख्या और पूर्वानुमान, और सरकारी नीति की सफलता या किसी अन्य संबंधित मुद्दे में आंकड़ो की प्रमुख भूमिका होती है, वहां पारिस्थितिकी तंत्र-आधारित मॉडल का योगदान अनिवार्य है। विस्तार एवं प्रशिक्षण प्रकोष्ठ प्रभारियों के साथ संस्थान के सभी पांच विभागाध्यक्षो ने भी उद्घाटन कार्यक्रम में भाग लिया और कार्यक्रम के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए. इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में, प्रशिक्षुओं को पारिस्थितिकी तंत्र मॉडलिंग के विभिन्न पहलुओं जैसे पारिस्थितिकी तंत्र आधारित मत्स्य प्रबंधन, विभिन्न खाद्य वेब मॉडलिंग, इकोपैथ, इकोसिम और इकोस्पेस मॉडल, अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के लिए विभिन्न सांख्यिकीय पैकेज और आर प्लेटफॉर्म में अन्य गतिशील मॉडलिंग आदि के बारे में सिखाया गया था। भारतीय सांख्यिकी संस्थान, कोलकाता विश्वविद्यालय,क्यूंग ही विश्वविद्यालय, कोरिया; आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर, आदि के विशेषज्ञ संसाधन व्यक्तियों द्वारा व्यावहारिक अभ्यास आयोजित किया गया। समापन सत्र में निदेशक, भाकृअनुप-सीआईएफआरआई ने सभी प्रतिभागियों से अंतर्स्थलीय खुले पानी में

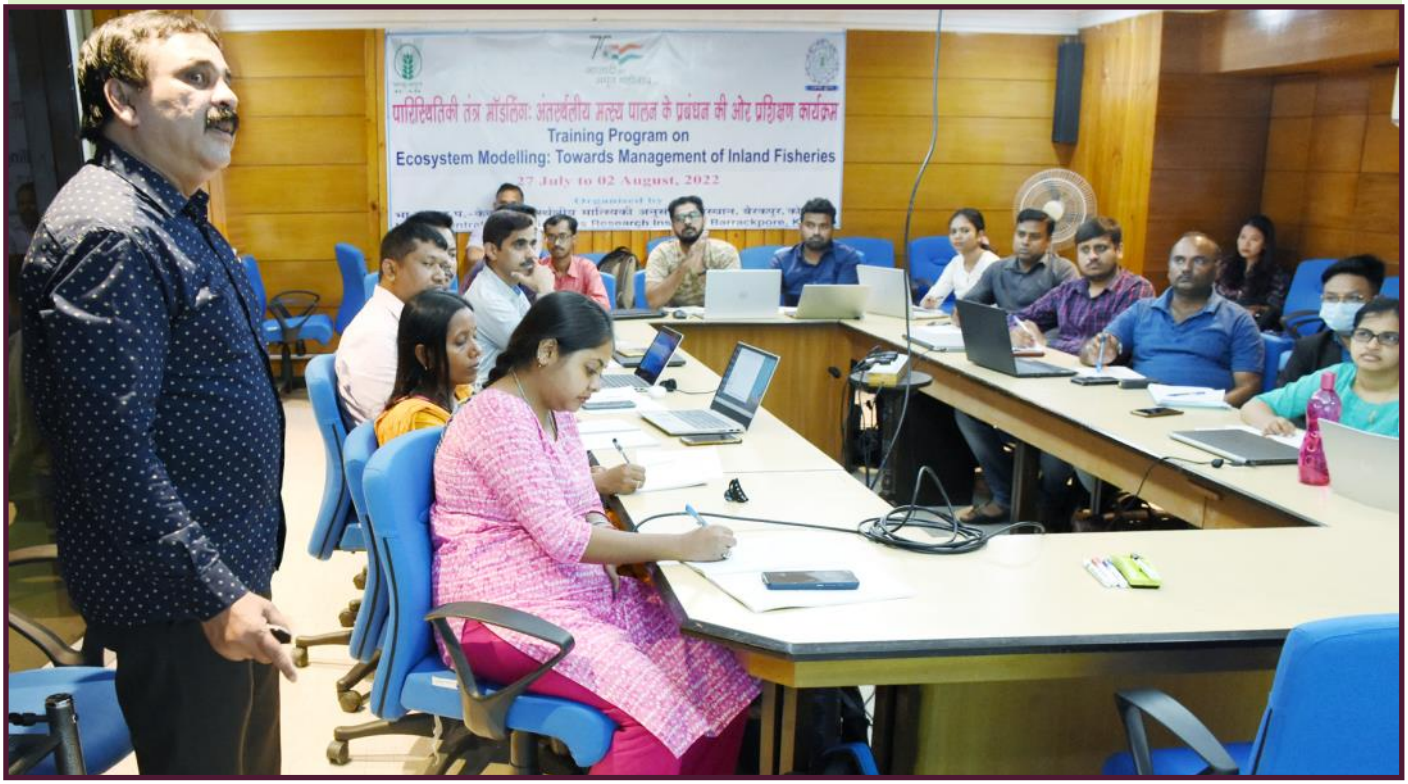

उपयुक्त प्रबंधन उपायों के लिए गुणवत्ता डेटा संग्रह के लिए अपने संबंधित क्षेत्र में कड़ी मेहनत करने का आग्रह किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को यह भी आश्वासन दिया कि पारिस्थितिकी तंत्र आधारित मॉडलिंग में अनुसंधान में आवश्यक किसी भी प्रकार के समर्थन के लिए सिफरी हमेशा सहायक रहेगा। प्रशिक्षण एवं विस्तार प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. अर्चन कांति दास ने सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफल समापन पर बधाई दी।

फीडबैक सत्र में, सभी प्रतिभागियों ने समग्र प्रशिक्षण कार्यक्रम के संचालन के बारे में अपनी पूर्ण संतुष्टि व्यक्त की और संस्थान द्वारा प्रदान किए गए समग्र आतिथ्य के लिए आयोजकों को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का समापन वैज्ञानिक डॉ. दिबाकर भक्त द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ और उन्होंने भाकृअनुप-सीआईएफआरआई के निदेशक, संसाधन व्यक्तियों, प्रशिक्षण समन्वयकों, प्रतिभागियों, और एक और उन सभी के प्रति हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कार्यक्रम से जुड़े थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन डॉ. एम. फ़िरोज़ खान, डॉ. प्रीता पणिक्कर, डॉ. दिबाकर भक्त, डॉ. पी. के. परिदा और सुश्री पी.आर. स्वैन द्वारा किया गया।

# अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत मछुआरों के लिए जलाशय मात्स्यिकी प्रबंधन और मत्स्ययन उपकरणों के वितरण पर संवेदीकरण कार्यक्रम

अनुसूचित जाति उप-योजना (एससीएसपी) के तहत, भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु ने 29 अगस्त 2022 को कर्नाटक के रामनगर जिले में स्थित मानचनबेले जलाशय में मछुआरों के लिए जलाशय मत्स्य प्रबंधन पर एक संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर 10 अनुसूचित जाति हितग्राहकों को मछली पकड़ने वाले जाल वितरित किये गए। कार्यक्रम में केंद्र प्रमुख, डॉ. प्रीथा पणिक्कर ने संस्थान प्रौद्योगिकियों के बारे में विस्तृत तौर पर बताया। साथ ही, श्री होन्नासिद्दैया, सहायक मत्स्य निदेशक, मगदी तालुक, रामनगर जिला और एवरहल्ली मछुआरा सहकारी समिति के श्री नारायण कुमार, अध्यक्ष; श्री सरस्वथम्मा, उपाध्यक्ष और श्री के गंगम्मा, सचिव ने दर्शकों को संबोधित किया और उनकी आजीविका सुधार में सहायता हेतु संस्थान के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। श्रीमति जेस्ना पी.के., वैज्ञानिक; डॉ. सोनालिका साहू, वैज्ञानिक और डॉ. एम.ई. विजयकुमार, तकनीकी अधिकारी ने जलाशयों से मछली उत्पादन बढ़ाने के विभिन्न तरीकों के बारे में बताया। संस्थान के निदेशक, डॉ. बि के दास के कुशल मार्गदर्शन में कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन डॉ. प्रीता पणिक्कर और डॉ. सिबिना मोल एस., श्रीमति जेस्ना पी.के., श्रीमति राम्या वी.एल. और डॉ. विजयकुमार द्वारा किया गया।

## सिफ़री ने संरक्षित क्षेत्र के संरक्षण हेतु मध्य प्रदेश में पन्ना टाइगर रिजर्व वन के जलाशयों का सर्वेक्षण किया

सिफ़री की एक टीम ने हाल ही में मध्य प्रदेश के पन्ना टाइगर रिजर्व में जल निकायों का दौरा किया, जो एक संरक्षित क्षेत्र है। राष्ट्रीय उद्यान के अंदर जलीय जैव विविधता की स्थिति के बारे में अधिक जानने के लिए यह सर्वेक्षण किया गया। मध्य प्रदेश के पन्ना और छतरपुर जिले का क्षेत्रफल 542.67 वर्ग किमी है। पन्ना को 2007 में भारतीय पर्यटन मंत्रालय द्वारा देश में सर्वश्रेष्ठ रखरखाव वाले राष्ट्रीय उद्यान के रूप में उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। यह 1994 में भारत में बाईसवें टाइगर रिजर्व और मध्य प्रदेश में पांचवें टाइगर रिजर्व के रूप में स्थापित किया गया था। केन घड़ियाल अभयारण्य और आस-पास के क्षेत्रीय प्रभागों के साथ पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के जंगल 406 किमी केन नदी के जलग्रहण क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो पार्क के बीच से लगभग 72 किमी उत्तर पूर्व में बहती है।

हिनौता बांध (24°63'95.41'N 80°02'71.16'E), मदला घाट (24°73'97.06'N 80°01'24.53'E), रंगुवां (24°69’ 58.71”N 79° 86’61.61”E), रामपुरा बांध (इटवान कलां) (24°58’03.52’N 80°07’71.24’E) और पांडव फॉल्स (24°73’05.81”N 80° 06’73.64”E) जैसे पांच नमूना स्थलों का चयन किया गया था। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में और उसके आसपास के जलाशयों के विभिन्न जैविक मापदंडों (प्लवक, पेरीफाइटन, बेन्थोस, आदि) को समझने के लिए, पानी और मिट्टी के नमूने के संग्रह भी लिए गए।

सर्वेक्षण अवधि (23-27 अगस्त, 2022) के दौरान पन्ना टाइगर रिजर्व वन परिसर के भीतर चयनित जल निकायों से कुल 47 फिनफिश प्रजातियों की पहचान की गई। *लैबियो डायोचिलस, लैबियो कतला, लैबियो रोहिता, लैबियो बोगट, सिस्टोमस सरना, टोर टोर,* आदि जैसी प्रजातियों के साथ साइप्रिनिडे परिवार की मछलियाँ भी पाई गई । इसके अलावा, कम होती हुई श्रेणियों के तहत पहचानी गई पांच स्वदेशी प्रजातियां, जैसे कि *टोर पुतिटोरा,* क्लारियस मांगुर, *ओमपोक बिमाकुलैटस, वालगो अट्टू,* और *चीताला चीताला* दर्ज की गई हैं। पन्ना नेशनल पार्क परिसरों के भीतर जल

निकायों से, चार विदेशी प्रजातियों के नमूने एकत्र किये गये, जिनमें *साइप्रिनस कार्पियो, ओरियोक्रोमिस निलोटिकस, हाइपोफथाल्मिचथिस नोबिलिस* और *पंगासियोडोन हाइपोफथाल्मस* शामिल हैं।

छोटी स्वदेशी मछली प्रजातियों (एसआईएफ) और सजावटी प्रजातियों की महत्वपूर्ण उपलब्धता, जिसमें *रासबोरा डैनिकोनियस, एसोमस डैनरिका, गर्रा लमटा, जी.गोटीला, पेथिया टिक्टो, चन्ना गचुआ* और *नेंदस नेंदस* को नदी की मछलियों के ब्रूडर के रूप में सजावटी मत्स्य पालन प्रबंधन में उपयोग का सुझाव दिया।

हिनौता बांध में टीडीएस और आयनिक सांद्रता ज्यादा पाई गई है ऐसा अनुमान लगाया गया कि पास की हीरे की खदान में खनन गतिविधियों के कारण ऐसा हुआ है। यहाँ की संरक्षित क्षेत्रों के भीतर, उनके विशिष्ट पारिस्थितिक आवासों के साथ जलीय जैव विविधता के दस्तावेजीकरण की आवश्यकता है। इस तरह के शोध से न केवल जैव विविधता में सुधार होता है, बल्कि लोगों को इसके महत्व और ऐसे संरक्षित वातावरण को संरक्षित करने के तरीके के बारे में भी शिक्षित किया जाता है। सिफ़री के निदेशक डॉ. बसंत के. दास के नेतृत्व में डॉ. रंजन के. मन्ना, डॉ. दिबाकर भक्त और श्री आर.सी. मंडी ने संरक्षित क्षेत्र परियोजना के हिस्से के रूप में यह सर्वेक्षण सम्पन्न किया।

# संस्थान ने नेवटिया विश्वविद्यालय, सरिशा के छात्रों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 26 अगस्त से 1 सितंबर दौरान आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में नेवतिया विश्वविद्यालय के कुल 23 छात्रों ने भाग लिया। यह प्रशिक्षण बी.एफ.एससी पाठ्यक्रम के छात्र के तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक कौशल में सुधार के लिए आयोजित किया गया। एक सप्ताह तक चलने वाले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में मछली पालन के विभिन्न विषयों जैसे जल गुणवत्ता प्रबंधन, प्रेरित प्रजनन तकनीक, मिश्रित मछली पालन, एसआईएफ के साथ मछली का पॉलीकल्चर, मछली रोग प्रबंधन, चारा तैयार करना और सजावटी मछली पालन तकनीक आदि पर विशेष जोर दिया गया। जल गुणवत्ता विश्लेषण, मछली रोग की पहचान, मछली फ़ीड तैयार करने के साथ-साथ पूर्वी कोलकाता वेटलैंड और सजावटी मछली बाजार में पालन प्रणालियों के लिए प्रशिक्षुओं के क्षेत्र में प्रदर्शन की व्यावहारिक कक्षाएं भी आयोजित की गईं। समापन सत्र में, डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने छात्रों के साथ बातचीत की और उन्हें अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन पर ज्ञान और कौशल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। यह अनुमान है कि प्रशिक्षण कार्यक्रम का ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और विशेषताओं के सुधार के लिए प्रशिक्षुओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

## मुख्य शोध उपलब्धियां

- एशियाई लीफ मछली, नेंदस नेंदस की प्राकृतिक जनसंख्या विशेषता और प्रजनन फेनोलॉजी पर क्षेत्रीय जलवायु परिवर्तनशीलता के प्रभाव का अध्ययन किया गया और इसकी भेद्यता का पूर्वानुमान किया गया। असम के ब्रह्मपुत्र बेसिन और पश्चिम बंगाल के गंगा बेसिन का तापमान तथा वर्षापात का स्तर लीफ फिश के प्रजनन के लिए इष्टतम पाया गया।
- सरदार सरोवर जलाशय के मध्य प्रदेश भाग में नदी-जलाशय संगम क्षेत्र में मछली प्रजाति वितरण संरचना का अध्ययन किया गया जिसमें यह पाया गया कि डेक्कन प्रायद्वीपीय कार्प, *लेबियो फिम्ब्रिएटस* और महसीर प्रजाति, *टोर खुदरी* जैसी मछली प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं और इनके संरक्षण की नितांत आवश्यकता है।
- पाउचड ऑक्टोपस, सिस्टोपस प्लैटिनोइडस श्रीजा भारतीय सुंदरबन के गोसाबा-सजनेखाली क्षेत्र में अच्छी संख्या में पाए गए जिसका कारण था- जल की लवणता में वृद्धि ।
- किशोर ट्रिपलटेल *लोबोट्स सूरीनामेंसिस* (ब्लोच, 1790) को पहली बार मातलाह ज्वारनदमुख के झारखाली मुहाना क्षेत्र में पाया गया था। इससे यह पता चलता है कि इसके आसपास के मैंग्रोव क्षेत्र में इस प्रजातियों के प्रजनन के लिए उपयुक्त पारिस्थिकी है।
- जुलाई 2022 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमानित मछली लैंडिंग का 14.476 टन था, जो जुलाई 2021 में कुल मछली पकड़ की तुलना में 147.41 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है।

## बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने 22 जुलाई 2022 को कुलतोली गाँव, सुंदरबन, पश्चिम बंगाल में भारतीय स्टेट बैंक, बारूईपुर, दक्षिण 24 परगना के कस्टमर आउटरीच और कनेक्ट कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर डा बि के दास, निदेशक को मात्स्यिकी क्षेत्र में उत्तम योगदान के लिए एक सम्मान चिन्ह भेंट किया गया।
- संस्थान के निदेशक ने 25 जुलाई 2022 को कोलकाता के साल्ट लेक में आईएफसी-एकीकृत कृषि क्लस्टर पर राज्य स्तरीय संचालन समिति की तीसरी बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने 5 अगस्त 2022 को कोलकाता में भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई)-सीआईआई पशुधन कार्यबल के साथ बैठक में भाग लिया।

## कार्यक्रम

- दिनांक 27 जुलाई, 2022 को संस्थान में "गैर-पारंपरिक जलीय कृषि प्रणालियों" पर राष्ट्रीय अभियान आयोजित हुआ जिसमें लगभग 104 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों मोड में भाग लिया।
- दिनांक 27 जुलाई, 2022 को फाउंडेशन फॉर इनोवेशन एंड रिसर्च इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी (FIRST), भारतीय प्रोद्योगिकी संस्था, कानपुर के सहयोग से "अबाउट-बायोटेक्नोलॉजी इग्निशन ग्रांट (BIG) और इसके प्रसाद" पर एक सत्र आयोजित किया गया, जिसमें 53 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन और ऑफलाइन मोड में भाग लिया।
- India@75 (भारतीय स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ - "आजादी का अमृत महोत्सव"), भाकृअनुप-राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (ICAR-NBFGR) को सात मत्स्य अनुसंधान संस्थानों (CIFRI, CMFRI, CIFE, CIFT, CIFA) के साथ संयुक्त रूप से मनाने के लिए आईसीएआर के सीआईबीए और डीसीएफआर) ने 4 अगस्त, 2022 को 'सतत मत्स्य पालन और जैव विविधता संरक्षण के लिए भागीदारी प्रबंधन' पर एक राष्ट्रीय अभियान का आयोजन किया है। इस अवसर पर, रामघाट, वाराणसी, उत्तर प्रदेश में एक किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया था। इस अभियान में उपरोक्त संस्थानों के कर्मचारियों, मछुआरों और हितधारकों सहित लगभग 124 व्यक्तियों ने भाग लिया।
- भारत @75 (भारतीय स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ - "आजादी का अमृत महोत्सव") मनाने के लिए, भाकृअनुप-केंद्रीय खारा जल एक्वाकल्चर संस्थान (ICAR-CIBA) ने सात ICAR मत्स्य अनुसंधान संस्थानों (CIFRI, CMFRI, CIFE, CIFT, CIFA) के साथ संयुक्त रूप से , NBFGR & DCFR) ने 29 जुलाई 2022 को वेबिनार का आयोजन किया। उसी दिन, 29 जुलाई, 2022 को अपने मुख्यालय, बैरकपुर में राष्ट्रीय अभियान "एक्वाकल्चर में मछली स्वास्थ्य प्रबंधन" के हिस्से के रूप में एक मंथन सत्र आयोजित हुआ। जिसमें कुल 107 कर्मचारियों ने भाग लिया।

## प्रशिक्षण

- दिनांक 22-28 जुलाई, 2022 के दौरान टीएसपी के तहत "उत्पादन वृद्धि के लिए जलाशय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मणिपुर के 13 आदिवासी मछली किसानों ने भाग लिया।
- संस्थान में दिनांक 19 अगस्त 2022 को मेदिया बील, पश्चिम बंगाल में मछली संचयन कार्यक्रम का आयोजन किया और 500 किलोग्राम जलवायु अनुकूलन मछली प्रजातियों का मत्स्ययन हुआ। सिस्टोमस सरना, लैबियो बाटा के साथ आईएमसी, *लैबियो रोहिता, लेबियो कतला,* पिंजरों से *सिरहिनस मृगला* को मछली स्टॉक बढ़ाने के लिए खुली आर्द्रभूमि में स्टॉक किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 50 बील मछुआरों ने भाग लिया।

## अन्य

- वाराणसी से रामनगर से सुजाबाद तक वरुण मुहाना (वरुण नदी के प्रमुख) सहित, दोनों किनारों पर जुलाई 2022 के अंतिम सप्ताह में छोटे आकार की मछलियों की मृत्यु दर्ज की गई थी। डोंबरी गांव के पास गंगा नदी के एक किलोमीटर लंबे हिस्से में ज्यादातर मरी हुई मछलियां मिलीं। देखी गई मछलियाँ ज्यादातर 6-10 सेमी लंबाई के आकार की थीं, जिसमें *गोनियालोसा मैनमिना, गुडूसिया छपरा, गोगंगरा विराइडसेन्स* और *स्यूडोसियाना कॉइटर* शामिल थे। प्रयोगशाला में इसके विश्लेषण के लिए नदी के किनारे तीन स्थलों से पानी और मिट्टी के नमूने एकत्र किए गए।

# सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

## बेलेडांगा और चामता बील में एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन पर हितधारकों की बैठक

बैरकपुर, कोलकाता » दबंग ब्यूरो

पश्चिम बंगाल में मछुआरों के लिए आर्द्रभूमि मत्स्य पालन उनकी आजीविका और भोजन के प्रमुख स्रोतों में से एक हैं। भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान आर्द्रभूमि मात्स्यिकी के विकास में अनुकूल प्रौद्योगिकियों को अपनाकर लगातार मात्स्यिकी संवर्धन पर कार्य कर रहा है। इस क्रम में अनुसूचित जनजाति उपयोजना (एससीएसपी) कार्यक्रम के तहत, बील मछुआरों को पेन में मछली पालन तथा संबंधित तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है। इस संदर्भ में उत्तर 24 परगना के बेलेडांगा और चामता बील में 9 जुलाई, 2022 को एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन के लिए पेन में मछली पालन प्रौद्योगिकी पर दो हितधारक बैठक-सह-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 60 मत्स्य किसानों (प्रत्येक आर्द्रभूमि से 30 मछुआरे) ने भाग लिया। इस अवसर पर

अगले वर्ष में निवेश की राशि स्वरूप संचित ... जोर दिया। मछुआरों की समस्याओं और चुनौ... चर्चा की गई। डॉ. दास ने आर्द्रभूमि से सत... पालन और पोषण सुरक्षा के लिए छोटी देशी ... के संरक्षण पर भी जोर दिया। इस सभा में ड... पंडित, प्रधान वैज्ञानिक और डॉ. पीके परिदा, ... ने उत्पादन और संरक्षण के तरीकों के बारे में ... इस कार्यक्रम में बेलेडांगा और चामता आ... समिति सदस्यों में लगभग 7 टन सिफरी फीड...

## साहिबगंज / पाकुड़ पथ

## उपायुक्त ने गंगा नदी में छोड़ा विभिन्न प्रजातियों का कॉर्प मत्स्य इयरलिंग



पैरोकार वार्ता
pairokarvarta.com
Content that keeps you ahead

होम | सामयिक वार्ता | लोकल वार्ता | शिक्षा-संस्कृति वार्ता

Home › शिक्षा-संस्कृति वार्ता › सिफरी में हिन्दी संगोष्ठी का हुआ आयोजन

## सिफरी में हिन्दी संगोष्ठी का हुआ आयोजन

admin | 02/08/2022 | शिक्षा-संस्कृति वार्ता




**"स्वाधीनता के 75 वर्षों में भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास"**

कोलकाता, 1 अगस्त: भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), कोलकाता तथा भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता के समन्वित प्रयास से सिफरी मुख्यालय, बैरकपुर, कोलकाता में दिनांक 29-30 जुलाई एक हिन्दी संगोष्ठी आयोजित की गई जिसका विषय था- "स्वाधीनता के 75 वर्षों में भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास"। यह कार्यशाला आज़ादी का अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित किया जिसका उद्देश्य देश में विगत 75 वर्षों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास को दर्शाना तथा अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन क्षेत्र में नवीनतम अनुसंधान और विकास योजनाओं और प्रौद्योगिकियों पर प्रकाश डालना है। इस संगोष्ठी का उद्घाटन दिनांक 29 जुलाई को सिफरी मुख्यालय, बैरकपुर में हुआ जिसमें भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), कोलकाता (कार्यालय-2), कोल इंडिया जैसे प्रतिष्ठित संगठनों के गणमान्य उच्चाधिकारीगण, वैज्ञानिक और शोध छात्रों ने भाग लिया।

## অসমীয়া প্ৰতিদিন

## বিল তথা প্ৰাকৃতিক জলাশয়ৰ সংবৰ্ধন-উন্নয়নাৰ্থে মনোজ্ঞ চিন্তন-মন্থন

গুৱাহাটী, ২১ জুলাই ঃ ভাৰতীয় কৃষি গৱেষণা পৰিষদৰ অন্তৰ্গত বাৰাকপুৰত মুখ্য কাৰ্যালয়স্থিত কেন্দ্ৰীয় অন্তৰ্দেশীয় মীন ক্ষেত্ৰ গৱেষণা প্ৰতিষ্ঠানৰ উদ্যোগত মীন বিভাগ, ফিছফেড, অসম মীন উন্নয়ন নিগম, জীৱ সুৰক্ষা আৰু সংশ্লিষ্ট সকলোৰে সহযোগত আজি মীন সঞ্চালকালয়ৰ সন্মিলনী কক্ষত অসমৰ বিল তথা প্ৰাকৃতিক জলাশয়ৰ সংবৰ্ধন আৰু উন্নয়নাৰ্থে এক মনোজ্ঞ চিন্তন-মন্থন মতে বিনিময় আলোচনা অনুষ্ঠিত হয়। মীন বিভাগৰ বিশ্বব্যাংক প্ৰকল্পৰ নডেল বিষয়া তথা ফিছফেডৰ পৰিচালন সঞ্চালক ড° ধ্ৰুৱজ্যোতি শৰ্মাই বন্তি প্ৰজ্বলিত কৰি অনুষ্ঠানটিৰ শুভাৰম্ভ কৰে। মীন সঞ্চালক জয়প্ৰকাশ মেধিয়ে মীন বিভাগৰ তৰফৰ পৰা সকলোকে আদৰণি জনাই বক্তব্য ৰাখে। মীন বিভাগৰ আয়ুক্ত-সচিব ভাৰতীয় প্ৰশাসনিক সেৱাৰ বিষয়া ৰাকেশ কুমাৰে গৱেষণা প্ৰতিষ্ঠানৰ প্ৰয়াসৰ শলাগ লয় আৰু তেওঁলোকৰ লগত যৌথ প্ৰচেষ্টাৰে ৰাজ্যৰ মীন খণ্ডৰ সমৃদ্ধি পোষকতা কৰে। কেন্দ্ৰীয় প্ৰতিষ্ঠানটিৰ সঞ্চালক ড° বি কে দাসে প্ৰতিষ্ঠানটিৰ কাম-কাজ অৱগত কৰি তেওঁলোকৰ তৰফৰ পৰা ৰাজ্যৰ মীন বিভাগক সহযোগিতাৰ আশ্বাস দিয়ে। মীন বিভাগৰ তৰফৰ পৰা মুখ্যমন্ত্ৰীৰ সমগ্ৰ গ্ৰাম্য উন্নয়ন যোজনাৰ অভিযান সঞ্চালক ড° ৰমেন্দ্ৰ চন্দ্ৰ বৰ্মনে আজিকোপতি সমাপিত কাম-কাজসমূহ দৃশ্য-শ্ৰব্য মাধ্যমেৰে উপস্থাপন কৰি পৰৱৰ্তী দিনৰ পৰিকল্পনা অৱগত কৰে। 'চিফৰিৰ' উত্তৰ-পূৱ শাখাৰ মুৰব্বী ড° বীৰেন্দ্ৰ কুমাৰ ভট্টাচাৰ্যই কেন্দ্ৰটিয়ে ৰাজ্যৰ বিল উন্নয়ন প্ৰসংগত বিভিন্ন কৰণীয় ব্যাখ্যা কৰে। অনুষ্ঠানত 'জীৱ সুৰক্ষা'ৰ বিজ্ঞানী ড° ৰঞ্জিতা বণিয়া, ফিছফেডৰ পৰিচালন সঞ্চালক ড° ধ্ৰুৱজ্যোতি শৰ্মা, মীন বিষয়ক আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় পৰামৰ্শদাতা সংস্থা বৰ্ল্ড ফিছৰ আৱাসিক পৰামৰ্শদাতা ড° সুৰেশ, অসম মীন উন্নয়ন নিগমৰ পৰিচালন সঞ্চালক প্ৰশান্ত বৰকাকতি আৰু অন্যান্যসকলে অংশগ্ৰহণ কৰে।

**प्रकाशन मंडल**

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

**भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान**,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है